

Cambridge O Level

| CANDIDATE NAME | | | | | |
|-------------------|--|--|---------------------|--|--|
| CENTRE NUMBER | | | CANDIDATE NUMBER | | |



ISLAMIYAT 2058/12

Paper 1 October/November 2020

1 hour 30 minutes

You must answer on the question paper.

No additional materials are needed.

INSTRUCTIONS

Answer four questions in total:

Answer Question 1.

Answer Question 2.

Answer two other questions.

- Use a black or dark blue pen.
- Write your name, centre number and candidate number in the boxes at the top of the page.
- Write your answer to each question in the space provided.
- Do not use an erasable pen or correction fluid.
- Do not write on any bar codes.

INFORMATION

- The total mark for this paper is 50.
- The number of marks for each question or part question is shown in brackets [].

This document has 20 pages. Blank pages are indicated.

You must answer Question 1, Question 2 and two other questions.

- 1 Choose any **two** of the following passages from the Qur'an, and
 - (a) briefly describe the main theme(s) in each passage; [4]
 - (b) briefly explain the importance of these themes in a Muslim's life today. [4]
 - السم الله الرّحمن الرّحيم الْحَمْدُ لله رَبِّ الْعَالَمِينَ الرّحمن الرّحيم مالك يوم الدّين ايّاك نعبُدُ وإيّاك نستعينُ اهدنا الصرّاط المستقيم
 - صِرَاطُ الَّذِينَ أَنعَمتَ عَلَيهِمْ غَيرِ المَغضُوبِ عَلَيهِمْ وَلا الضَّالِّينَ
 - (i) 1. In the name of Allah, most gracious, most merciful. 2. Praise be to Allah, the cherisher and sustainer of the worlds; 3. Most gracious, most merciful; 4. Master of the day of judgment. 5. You we worship, and your aid we seek. 6. Show us the straight way, 7. The way of those to whom You have given your grace, not those who earn your anger, nor those who go astray. (Sura 1)
 - (ii) وَكَذَلِكَ نُرِي إِبْرَاهِيمَ مَلَكُوتَ السَّمَاوَاتِ وَالأرْض وَلِيَكُونَ مِنَ الْمُوقِنِينَ فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ اللَّيْلُ رَأَى كَوْكَبًا قَالَ هَذَا رَبِّي فَلَمَّا أَفْلَ قَالَ لا أُحِبُ الْآفِلِينَ فَلَمَّا رَأَى الْقُوْمِ الطَّالِينَ فَلَمَّا رَأَى الْقُوْمِ الطَّالِينَ فَلَمَّا رَأَى الْقُوْمِ الطَّالِينَ فَلَمَّا رَأَى الشَّمْسَ بَازِغَة قَالَ هَذَا رَبِّي هَذَا أَكْبَرُ فَلَمَّا أَفْلَتْ قَالَ يَا قُوْمِ إِنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا تُشْرِكُونَ فَلَمَّا رَأَى الشَّمْسَ بَازِغَة قَالَ هَذَا رَبِّي هَذَا أَكْبَرُ فَلَمَّا أَفْلَتْ قَالَ يَا قُوْمِ إِنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا تُشْرِكُونَ إِنِّي وَجَهْتُ وَجْهِي لِلَّذِي فَطْرَ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضَ حَنِيقًا وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ
 - (ii) 75. So also did We show Abraham the power and the laws of the heavens and the earth, so that he might have certainty. 76. When the night covered him over, he saw a star: He said: 'This is my Lord.' But when it set, he said: 'I do not love things that set.' 77. When he saw the moon rising in splendour, he said: 'This is my Lord.' But when the moon set, he said: 'Unless my Lord guides me, I will surely be among those who go astray.' 78. When he saw the sun rising in splendour, he said: 'This is my Lord; this is the greatest.' But when the sun set, he said: 'O my people! I am indeed free from your giving partners to Allah.' 79. 'For me, I have set my face firmly and truly towards Him who created the heavens and the earth, and never shall I give partners to Allah.' (Sura 6.75–79)

(iii) إِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكُو ْثَرَ

فصل لربلك والمحر

إِنَّ شَانِئَكَ هُو َ الْأَبْتَرُ

(iii) 1. To you have We granted abundance. 2. So pray to your Lord and sacrifice. 3. For he who hates you, he will be cut off. *(Sura 108)*

| |
|-------|
| |
| |
| |
| |
| ••••• |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| ••••• |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |

| | | |
|------|------|--|
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |

| 2 | (a) | (a) Describe the different ways that the Prophet (pbuh) received revelation from God. | | | | |
|---|-----|---|-----|--|--|--|
| | (b) | Why do you think that the revelation was sent to someone who could not read or write? | [4] | | | |
| | | | | | | |
| | | | | | | |
| | | | | | | |
| | | | | | | |
| | | | | | | |
| | | | | | | |
| | | | | | | |
| | | | | | | |
| | | | | | | |
| | | | | | | |
| | | | | | | |
| | | | | | | |
| | | | | | | |
| | | | | | | |
| | | | | | | |
| | | | | | | |
| | | | | | | |
| | | | | | | |
| | | | | | | |
| | | | | | | |
| | | | | | | |
| | | | | | | |
| | | | | | | |
| | | | | | | |
| | | | | | | |

| |
|-------|
| |
| |
| |
| |
| ••••• |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| ••••• |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |

| | | |
|------|------|--|
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |

| b) | How can the Prophet's response to opposition help Muslims when they are mistreated? | |
|----|---|-----------|
| | | . |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |

| | | |
|------|------|--|
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |

| | | |
|------|------|--|
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |

| 1 | (a) | Describe the events of the migration (hijra) from Makka to Madina. | [10] | | |
|---|-----|---|------|--|--|
| | (b) | In what way is this journey significant for the Muslim community now? | [4] | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |

| |
|-------|
| |
| |
| |
| |
| ••••• |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| ••••• |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |

| | | |
|------|------|--|
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |

| 5 | (a) | Write about the brotherhood in Madina that developed between the Helpers (<i>Ansar</i>) and the Emigrants (<i>Muhajirun</i>). [10] | |
|---|-----|--|--|
| | (b) | How can Muslims today show their brotherhood and sisterhood towards each other? [4] | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |

| |
|------|
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |

BLANK PAGE

BLANK PAGE

BLANK PAGE

Permission to reproduce items where third-party owned material protected by copyright is included has been sought and cleared where possible. Every reasonable effort has been made by the publisher (UCLES) to trace copyright holders, but if any items requiring clearance have unwittingly been included, the publisher will be pleased to make amends at the earliest possible opportunity.

To avoid the issue of disclosure of answer-related information to candidates, all copyright acknowledgements are reproduced online in the Cambridge Assessment International Education Copyright Acknowledgements Booklet. This is produced for each series of examinations and is freely available to download at www.cambridgeinternational.org after the live examination series.

Cambridge Assessment International Education is part of the Cambridge Assessment Group. Cambridge Assessment is the brand name of the University of Cambridge Local Examinations Syndicate (UCLES), which itself is a department of the University of Cambridge.